रात्रि क्लास 21/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

मूल बात है निर्विकारी दुनिया और विकारी दुनिया। फर्क यह है यह तो बिल्कुल सहज समझ में आता है। नई दुनिया निर्विकारी है, पुरानी दुनिया विकारी है। अगर विकारी से निर्विकारी बन जाये तो नई दुनिया हो जाये इसको ही कहा जाता है सेकण्ड में जीवनमुक्ति। विकारी माना है बन्धन। है बहुत सहज। शायद किसको समझाना है सहज, करना कठिन है। कहते हैं हो नहीं सकता जो निर्विकारी रह सके। वह तो हैं ही निवृत्ति मार्ग वाले। प्रवृत्ति मार्ग वाले भी नर–नारी पवित्र थे। यथा राजा–रानी तथा प्रजा कहा जाता है। तुम्हारे पास तो चित्र भी है। ल0ना0 की डिनायस्टी वा देवी–देवताओं का राज्य है वह निर्विकारी है। अभी है विकारी हैं तो देवी–देवताएँ भी उनको नहीं कहा जाता सकता। समझानी भी बहुत सहज है मनुष्यों के लिए। पवित्र भी भगवान ही बनावेंगे। इसलिए भगवान को मनुष्य याद करते हैं। सर्वव्यापी की बात भी खुद समझते नहीं हैं। भगवान तो है निराकार। जैसे आत्मा है वैसे वह परम–आत्मा है। रुद्र पूजा जब होती है तो शिवलिंग एक बड़ा बनाते हैं बाकी शाली ग्राम छोटे2 बनाते हैं। रुद्र शिव को कहते हैं। रुद्र भगवान कहेंगे। शालीग्राम को भगवान नहीं कहेंगे। ऐसे2 बहुत प्वाइंट्स हैं। एकान्त में मेहनत कर समझाया जाता है तो समझते भी हैं। तुम जानते हो बाप स्थापना करने आते हैं। सो तो अनेक बार कल्प2 आकर स्थापना जैसे की है कर रहे हैं। बच्चे जानते हैं आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना हो रही है। होती है ब्रह्मा द्वारा। यानी ब्राह्मणों द्वारा। तो जरूर ब्रह्मा ही देवता बनेंगे ना। ब्राह्मण की स्थापना करते हैं तो देवता बनते होंगे जरूर। फिर देवताओं का घराणा कहा जाता है। ब्राह्मणों का घराणा वा डिनायस्टी नहीं कहा जाता। ब्राह्मणों की राजधानी नहीं होती है। इस समय है प्रजा का प्रजा पर राज्य। असल जो क्रिश्चयन हैं वह क्राइस्ट को मानते हैं। दूसरे2 फिर अलग2 हो गये हैं। धर्म को ही नहीं मानते। बाप कहते हैं पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। इसमें धांधल की क्या दरकार है। बाप के समझाने से बुजूर्ग है ना तो वह असर पड़ता है। आखरीन तो समझ ही जावेंगे। धांधल छोड़ देंगे। यहाँ आकर प्रतिज्ञा भी करते हैं बाबा हम आपके श्रीमत पर चलेंगे। बेहद के बाप से हम प्रतिज्ञा करते हैं; परन्तु माया भी ऐसी है तो दिमाग ही गुम कर देती है। गुस्से में होते हैं तो कहते हैं चमाट ऐसी लगाऊँगा जो पट से जा पड़ोगे। माया भी कहती है एक चमाट ही लगाये निर्विकारी से विकारी बना देगी। मुख्य सारा मदार है पवित्रता पर। रामराज्य और रावणराज्य आधा2 समय चलता है। बहुत पत्थर बुद्धि हैं इसलिए कहाँ जाये समझाने की दिल नहीं होती। है भी बहुत सहज बात। बाप समझाते हैं पावन दुनिया जरूर स्थापन होनी ही है। विवेक कहते हैं आदमशुमारी में तो जरूर क्रिश्चयन माने जावेंगे; परन्तु क्राइस्ट को नहीं मानते तो काग्रेस हो गये हैं। राजा रानी नहीं। रसिया भी तो क्रिश्चयन है ना; परन्तु राजा रानी नहीं है। उड़ा दिया है। छी छी बन गये हैं। राजा रानी प्रजा के मुँहा पड़ जाते हैं। बच्चे जो अच्छे2 समझदार हैं वह दैवीगुण धारण करते ही रहते हैं। एक तो दैवीगुण धारण करनी है। और फालतू किसको दुख न देना चाहिए। किसको तंग तो नहीं किया। दुख तो नहीं दिया। तुम बच्चे हो सुख देने वाले। दुख अथवा माया को भगाने वाले। सारा मदार है पवित्रता और अपवित्रता पर। पवित्रता है तो सुख–शान्ति भी है। अपवित्रता है तो अशांति है। अभी फिर शान्ति के लिए बाप कहते हैं पवित्र बनो। काम महाशत्रु है। उनको जीतना है। भगवान खुद कहते हैं काम महाशत्रु को जीतो जगत जीत बनेंगे। कितना सहज समझाने का है फिर भी ठहर नहीं सकते हैं। आगे चल ठहर भी जाये। बुलाते हैं पतित–पावन बाबा आओ। जब बाबा आते हैं तो बच्चे कितने धांधल करते हैं। बच्चे भी पुरुषार्थ करते रहते हैं। युक्तियाँ भी बड़ी अच्छी है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पवित्र बन मेरे पास आ जावेंगे। पवित्रता के बीच में कोई अपवित्र काम न करो। भगवान बाप समझाते हैं कान पकड़ना चाहिए यह बेहद का बाप कहते हैं कान पकड़ों फिर कब ऐसा काम न करना। नहीं तो मुफ्त घाटा पड़ जावेगा; परन्तु ऐसी आदत होती है जो फिर हो जाता है। माया भूल कराये देती है। बच्चे हैं ना। छोटे2 झाड़ झट गिर पड़ते हैं। पक्के ठहर जाते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।